श्रीआचार्य महाप्रभु श्रीहितहरिवंश जी कृत

श्रीयमुनाष्टक

व्रजाधिराजनन्दनाम्बुदाभगात्र चंदना-
नुलेपगंधवाहिनीं भवाब्धिबीजदाहिनीम्।
जगत्त्रये यशस्विनीं लसत्सुधा पयस्विनीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम्॥१॥

श्रीकृष्णचन्द्र के अंग से लगे हुए चन्दन की सुगन्धि बहाने वाली संसार रूपी समुद्र के दुःख सुख बीजों को जराने वाली तीनों लोक में यश तथा प्रकाशमान अमृत तुल्य जल बहाने वाली मोह के नाश करनेवाली श्रीसूर्यपुत्री यमुनाजी को मैं सेवन करताहूँ।

रसैकसीमराधिका पदाब्जभक्ति साधिकाम्
तदंगरागपिंजरप्रभातिपुञ्जमंजुलाम् ।
स्वरोचिषातिशोभितां कृतां जनाधि गञ्जनाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्॥२॥

रस रूपी समुद्र की सीमा श्रीराधिकाजी उनके चरणकमलों में भक्ति और उन्हीं के अंग की लालिमा से शोभा देने वाली कोमल बालू ने अपनी कान्ति से मनुष्यों के पाप नाश किये और करती हैं ऐसी श्रीयमुनाजी का मैं सेवन करता हूँ।

ब्रजेन्द्रसूनुराधिकाहृदि प्रपूर्य्यमाणयो-
र्महारसाब्धिपूरयोरिवाति तीव्रवेगतः।
बहिः समुच्छलन्नवप्रवाहरूपिणीमहम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्तमोहभञ्जिनीम्॥३॥

श्रीकृष्णचन्द्र तथा श्रीराधिकाजी दोनों के ध्यान से हृदय भरा हुआ रस का समुद्र उससे पूर्ण तीव्र गति किनारे पर उछलकर नवीन प्रवाह से बहने वाली (अर्थात् श्रीप्रिया-प्रियतम के परस्पर प्रेम से हृदय परिपूर्ण और महारास के समुद्र सरीखा तीव्र वेग) ऐसी श्रीयमुनाजी का मैं सेवन करता हूँ।

विचित्ररत्नबद्ध सत्तटद्वयश्रियोज्ज्वलाम्
विचित्र हंससारसाद्यनन्तपक्षिसंकुलाम्।
विचित्र मीनमेखलां कृतातिदीनपालिताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्॥४॥

चित्र-विचित्र रत्नों से जड़े हुए दोनों किनारे उनकी कान्ति से प्रकाशवान् नाना प्रकार के सारस आदि अनन्त पक्षियों से युक्त तथा तरह-तरह की मछलियों की मेखला युक्त दीनों के पालन करने वाला श्रीयमुनाजी के स्वरूप को मैं सेवन करता हूँ।

वहंतिकां श्रियां हरेर्मुदा कृपास्वरूपिणीम्
विशुद्धभक्तिमुज्ज्वलां परे रसात्मिकां विदुः।
सुधाश्रुतिन्वलौकिकीं परेशवर्णरूपिणीम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्।।५।।

महाकृपा की स्वरूपिणी विशुद्ध भक्ति उज्ज्वल पर (उत्कृष्ट) रस के जानने वाली अमृत और श्रुति की अलौकिक ईश्वर तुल्य रूप वाली संसार के मोह को नाश करने वाली श्रीयमुनाजी का मैं सेवन करता हूँ।

सुरेन्द्रवृन्दवन्दितां रसादधिष्ठिते वने
सदोपलब्धमाधवाद्भुतैक सदृशोन्मदाम्।
अतीव विह्वलामिवोच्च्लत्तरंगदोर्लताम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्।।६।।

देवताओं में इन्द्रों के समूहों से नमस्कार की गई रस से अधिष्ठित श्रेष्ठ उपलब्ध माधव के अद्भुत उन्माद सदृश अत्यन्त विह्वल सरीखी चंचल लहरें ऐसी श्रीयमुनाजी को मैं सेवन करता हूँ।

प्रफुल्लपंकजाननां लसन्नवोत्पलेक्षणाम्
रथांगनामयुग्मकस्तनीमुदार हंसकाम्।
नितंबचारुरोधसां हरेर्प्रिया रसोज्ज्वलां
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्।।७।।

प्रफुल्लित कमल-सा मुख जिनका प्रकाशमान नवीन कमल से नेत्र जिनके चक्रवात मिथुन से उन्नत स्तन वाली मनोहर नितम्ब वही है किनारा श्रीकृष्ण भगवान् को प्रियाजी के रस से उज्ज्वल ऐसी श्रीयमुनाजी को मैं सेवन करता हूँ।

समस्तवेदमस्तकैरगम्य वैभवां सदा
महामुनीन्द्रनारदादिभिः सदैव भाविताम्।
अतुल्यपामरैरपि श्रितां पुमर्थसारदाम्
भजे कलिन्दनन्दिनीं दुरन्त मोहभञ्जिनीम्।।८।।

सम्पूर्ण वेदों की शिरोमणि अगम्य वैभव वाली नारदादि महामुनीन्द्रों से भावना की गई, देवताओं से सेवन की गई ऐसी श्रीयमुनाजी को मैं सेवन करता हूँ।

य एतदष्टकं बुधस्त्रिकालमादृतः पठेत्
कलिन्दनन्दिनीं हृदा विचिंत्य विश्ववंदिताम्।
इहैव राधिकापतेः पदाब्जभक्तिमुत्तमा-
मवाप्य स ध्रुवं भवेत्परत्र तत्प्रियानुगः।।९।।

जो पुरुष इस अष्टक को आदरपूर्वक त्रिकाल पढ़ै विश्ववंदित यमुनाजी का (कालिन्दी हृदय) हृदय में चिन्तमन करै तो श्रीराधावल्लभलाल (श्रीकृष्ण राधिकाजी) के चरण कमल में उत्तम